• बाल कविता...

लाला जी की तोंद...

लाला जी की प्यारी तोंद,
ढाई मन यह भारी तोंद!
इसमें, पिस्ता-दूध-मलाई
खोया, बरफी, बालूशाही,
आम, पपीते औ' अंगूर
मन भर लड्डू मोतीचूर।
खाते-खाते थक्कर भाई,
हिम्मत कभी न हारी तोंद!
मालिश इस पर करते लाला,
तेल पिलाकर इसको पाला,
आगे गोल, पीछे गोल-
तोंद बनी लाला की पोल।
पीछे-पीछे लाला चलते-
आगे सजी-संवारी तोंद!
हर दिन कपड़े छोटे होते
लाला जी तब बरबस रोते,
भीड़-भाड़ में चलते डरकर
हाथ लगा, जा गिरे सड़क पर।
सचमुच, आफत हो जाती यदि-
होती कभी हमारी तोंद!

-प्रकाश मनु

• चुटकुले...

मास्टर बच्चे की शिकायत कहने घर आया।
मास्टर – पप्पू तुम्हारे दादाजी कहां हैं?
पप्पू – जी दादाजी तो 10 दिन पहले चल बसे।
मास्टर – क्या ?? क्या हुआ था उनको?
पप्पू – हुआ कुछ नहीं था, योगा कर रहे थे, करते करते चले गए।
मास्टर – कैसे?
पप्पू – बाबा रामदेव ने बोला कि सांस अंदर लो और जब मैं कहूं तब छोड़ना।
तुरंत लाइट चली गई, फिर 3 घंटे बाद आई, तब तक दादाजी चल बसे...

टीचर–संजू यमुना नदी कहां बहती है?
संजू–जमीन पर...
टीचर–नक्शे में बताओं कहां बहती है?
संजू–नक्शे में कैसे बह सकती है सर, नक्शा गल नहीं जाएगा...

• आप जानते हैं...

दुती चंद...

जब भी किसी स्प्रिंटर का जिक्र होता है तो उभरकर आती है एक धावक की छवि, जो ट्रैक पर तेजी से दौड़ लगा रही है। भारत की चार फीट ग्यारह इंच की स्प्रिंटर दुती चंद को देखकर पहली नजर में कह पाना मुश्किल है कि मौजूदा दौर में वो एशिया की सबसे तेज दौड़ने वाली महिला खिलाड़ी हैं। दुती मुस्कुराते हुए बताती हैं कि साथी खिलाड़ी उन्हें प्यार से स्प्रिंट क्वीन कहते हैं। वो कहती हैं, साल 2012 में मैंने एक छोटी कार जीती थी, जिसके बाद दोस्तों ने मुझे नैनो कहना शुरू कर दिया था। पर अब मैं बड़ी हो गई हूं तो सब दीदी ही बुलाते हैं। पिता कपड़ा बुनने का काम करते थे, जाहिर है एथलीट बनने में उन्हें काफी तकलीफों का सामना करना पड़ा। उनकी बड़ी बहन सरस्वती चंद भी स्टेट लेवल स्प्रिंटर रही हैं, जिन्हें दौड़ता देखकर दुती ने भी एथलीट बनने का निश्चय किया। दुती की राह में चुनौतियां तो अभी बस शुरू हुई थीं। दौड़ने के लिए न तो उनके पास जूते थे, न रनिंग ट्रैक और न ही गुर सिखाने के लिए कोई कोच। साल 2005 में उनका सेलेक्शन गवर्मेंट सेक्टर में स्पोर्ट्स होस्टल में हो गया। वहां मुझे पहले कोच चितरंजन महापात्रा मिले। शुरुआती दौर में उन्होंने मुझे तैयार किया। दुती की मेहनत जल्द रंग लाई। साल 2007 में उन्होंने अपना पहला नेशनल लेवल मेडल जीता। हालांकि इंटरनेशनल मेडल के लिए उन्हें छह साल इंतजार करना पड़ा। साल 2013 में हुई एशियन चैम्पियनशिप में उन्होंने जूनियर खिलाड़ी होते हुए भी सीनियर स्तर पर भाग लिया और ब्रॉन्ज जीता। दुती का पहला इंटरनेशनल इवेंट जूनियर विश्व चैम्पियनशिप था, जिसमें भाग लेने के लिए वो तुर्की गई थीं। मेडल आने के बाद लोगों का नजरिया बदलने लगा। जो लोग मेडल से पहले उनकी आलोचना करते थे, वही अब उन्हें प्रोत्साहन देने लगे। 2016 के रियो ओलंपिक में दुती किसी ओलिंपिक के 100 मीटर इवेंट में हिस्सा लेने वाली तीसरी भारतीय महिला खिलाड़ी बनीं। न इसके बाद से दुती के प्रदर्शन में लगातार निखार ही आया। साल 2017 की एशियन एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में उन्होंने 100 मीटर और 4 गुना 100 मीटर रिले में दो ब्रॉन्ज मेडल जीते।

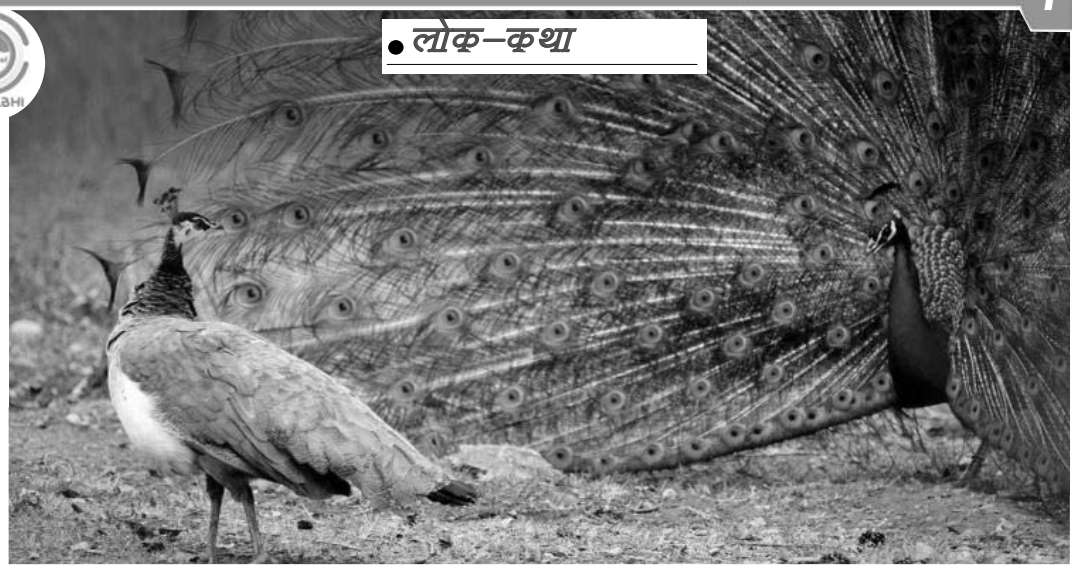

• लोक–कथा

बारिश हुई मोर बना

गेनरु आसाम की गारो जनजाति का मुखिया था। वह सबसे धनी था। जनजाति के लोग उसे बहुत मानते थे। उसकी सलाह से ही काम करते थे। गेनरु के एक ही लड़की थी-जयमाला। जितनी सुंदर, उतनी ही गुणी। नृत्य में तो उससे कोई मुकाबला ही नहीं कर सकता था। कई युवक उससे विवाह करना चाहते थे। पर जयमाला ने अपने प्रेमी से ही विवाह किया।

गारो जनजाति की रीतिनुसार लड़की ही माता-पिता के परिवार का वारिस होती है, और विवाह के बाद लड़की का पति लड़की के घर आकर उसके परिवार के साथ रहता है।

जयमाला का पति भी जयमाला के घर में आकर रहने लगा। माता-पिता अब बूढ़े होने लगे थे। एक दिन गेनरु ने जयमाला को बुलाकर अपनी सारी संपत्ति, घर, खेती, धन सब कुछ उसे सौंप दिया।

जयमाला की मां बक्से से ने कुछ मंत्र सा बोलकर एक रेशम और जरी के तारों से बुनी तथा नीले और हरे जवाहरात से जड़ी उत्तरीय या ओढ़नी निकाली।

ओ मां! कितनी सुंदर है यह ओढ़नी। जयमाला उसे ओढ़ने के लिए आगे बढ़ी।

रुको, हाथ मत लगाना। यह जादू की ओढ़नी है, जो देवी ने मेरी नानी की नानी को दी थी। इसे संभालकर रखना, और कभी भी मंत्र का उच्चारण किए बिना इसे हाथ मत लगाना, नहीं तो अनर्थ हो जाएगा, और मां ने जयमाला को मंत्र सिखाया। मंत्र सीखकर जयमाला ने ओढ़नी ओढ़ी।

कुछ दिन बाद जयमाला के माता-पिता का निधन हो गया।

जयमाला उदास हो गई। जयमाला और उसके पति ने खेती-बाड़ी अच्छी तरह से संभाली। जयमाला मां की दी हुई जादू की ओढ़नी बहुत संभालकर रखती। मंत्र पढ़कर उसे केवल खास मौकों पर पहनती, और धूप दिखाकर फिर बक्से में रखती। उस वर्ष सावन और भादों में मूसलाधार वर्षा हुई। कई दिन तक लगातार वर्षा होती रही। एक दिन अच्छी धूप निकली। जयमाला ने घर के कपड़े धूप में सुखाने के लिए डाले। उसमें उसने अपनी बहुमूल्य जादू की ओढ़नी भी धूप में डाली।

क्यों न आज मछली ले आऊं। बहुत दिन हुए मछली खाए, सोचकर जयमाला टोकरी और जाल लेकर झींगा मछली पकड़ने नदी पर गई।

जाने से पहले उसने पति को बताया, चाहे कितनी भी गीली हो जाए, ओढ़नी को हाथ मत लगाना।

अभी जयमाला ने कुछ ही मछलियां पकड़ी थीं कि देखते-देखते आकाश काले बादलों से ढक गया। बादल की गड़गड़ाहट और बिजली की कड़कड़ाहट में पानी बरसने लगा।

जयमाला के पति ने देखा कपड़े गीले हो रहे हैं। जयमाला के पति ने सोचा कि इतनी सुंदर ओढ़नी जो जयमाला को बहुत प्यारी है, भीग रही है, खराब हो जाएगी। उसने उसे उठाने के लिए जैसे ही हाथ लगाया, ओढ़नी उसके बदन से चिपक गई। अब उसका शरीर पक्षी के शरीर में बदलने लगा। उसके रंग-बिरंगे पंख निकलने लगे थे।

जयमाला वहां पहुंची। पति के शरीर को पक्षी के शरीर में बदलते देख वह रोने लगी। अपने दुख में वह मंत्र बोलना भूल गई। उसने पति के शरीर से लिपटी ओढ़नी खींचनी चाही। ओढ़नी को हाथ लगाते ही उसका शरीर भी बदलने लगा, पर उसके पक्षी शरीर में पंख कम निकले क्योंकि ओढ़नी का सारा रेशम तथा नीले-हरे जवाहरात पक्षी का शरीर बने पति के पंखों में बदल गए थे। जयमाला के हिस्से में कम या ना के बराबर पंख आए। जो आए वे पति के पंखों जैसे सुंदर और चमकीले नहीं थे।

हरे-नीले चमकीले पंखों वाला उसका पति बना मोर और जयमाला बनी कम पंखों वाली मोरनी। आज भी जब कभी आकाश में काले बादल छा जाते हैं और बारिश की रिमझिम होने लगती है तो मोर नाचते हुए अपनी मोरनी को आने के लिए आवाज देता है।

-सुरेखा पाणंदीकर

जयमाला का पति भी जयमाला के घर में आकर रहने लगा। माता-पिता अब बूढ़े होने लगे थे। एक दिन गेनरु ने जयमाला को बुलाकर अपनी सारी संपत्ति, घर, खेती, धन सब कुछ उसे सौंप दिया।

जयमाला की मां बक्से से ने कुछ मंत्र सा बोलकर एक रेशम और जरी के तारों से बुनी तथा नीले और हरे जवाहरात से जड़ी उत्तरीय या ओढ़नी निकाली...

• जानकारी...

लॉकडाउन तोड़ने की सजा...

दुनियाभर में लोग कोरोना से जुड़े नियमों और लॉकडाउन को तोड़ रहे हैं। भारत में भी लॉकडाउन तोड़ने के कई मामले सामने आए हैं। जिसके बाद सरकार ने लॉकडाउन तोड़ने वालों के खिलाफ 2 साल की सजा और जुर्माने का ऐलान भी किया है। इटली में लॉकडाउन तोड़ने की सजा काफी महंगी है। यहां बाहर निकलने पर 2.5 लाख और इटली के लोम्बार्डी में 4 लाख रुपए का जुर्माना है। वहीं हांगकांग में क्वारेंटाइन का नियम तोड़ने पर 2.5 लाख जुर्माना या 6 माह जेल होने का नियम है। सऊदी अरब में बीमारी छिपाने और ट्रैवल हिस्ट्री छिपाने पर 1 करोड़ रुपए के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। यह दुनिया में कोरोना से जुड़े नियमों को तोड़ने पर दी जाने वाली सबसे महंगी सजा है। वहीं, ऑस्ट्रेलिया की कुछ जगहों पर नियमों को तोड़ने पर 23 लाख रुपए जुर्माने चुकाने का प्रावधान है। कोरोना के कहर को देखते हुए रूस की संसद ने एंटी वायरस एक्ट को मंजूरी दी है। इसमें क्वारेंटाइन के नियमों को तोड़ने पर 7 साल की सजा सुनाने का प्रावधान।

• समंदर के किनारे जमीन...

कई समंदर तो चारों तरफ से जमीन से घिरे होते हैं, जैस कि भूमध्य सागर और काला सागर। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि सागर कहां महासागर में मिल जाते हैं पता नहीं चलता लेकिन ऐसे में द्वीपों की माला को जोड़ कर देखा जाए तो इसकी जानकारी भी लगाई जा सकता है। लेकिन एक ऐसा समंदर है जिसके किसी किनारे कोई जमीन नहीं है, ये है सारगास्सो सागर। ये अटलांटिक सागर के पश्चिम में है और उत्तर अटलांटिक में एक तरफ को मुड़ती लहरें ही इसकी सीमा बनाती हैं।